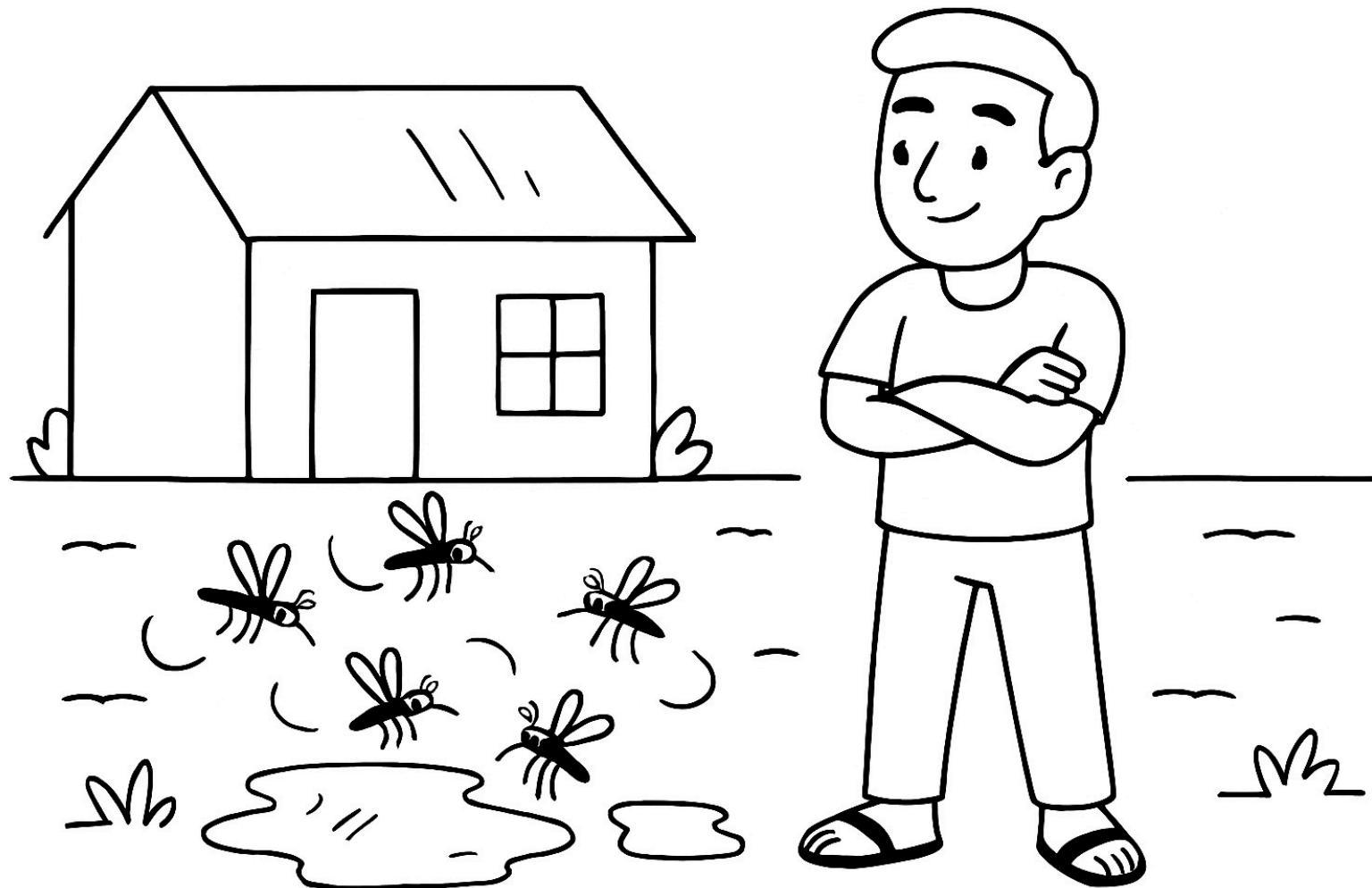


साफ-सौफाइ कौरौ मच्छरुं कौइ बौचौ



साफ-सौफाइ कौरौ मच्छरं कौइ बौचौ

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

प्रकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकि जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद ॥



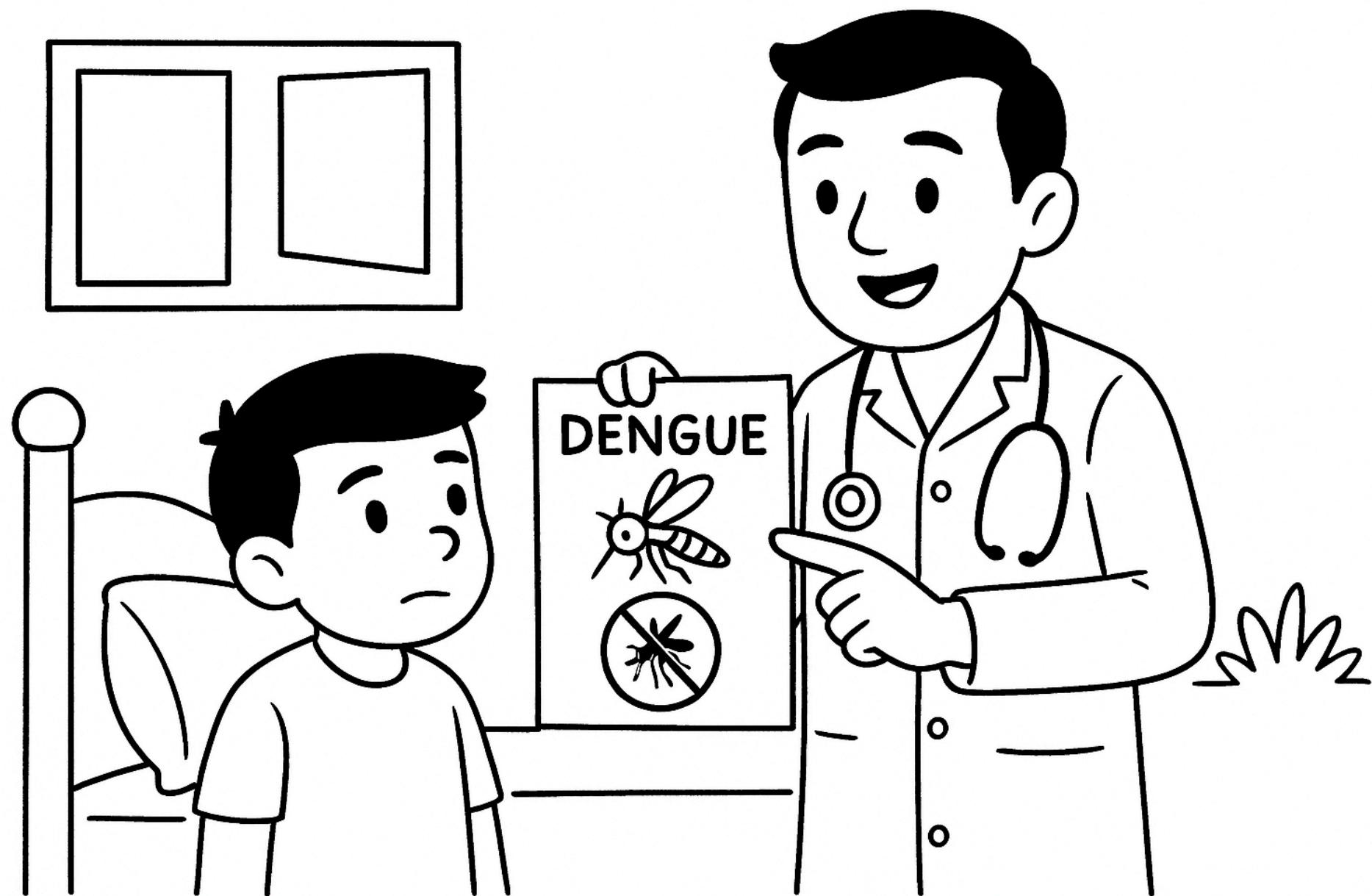
एक गाउँ दि औरिया आपडै
पौरिबार रै साथै रायै थौ, बौरसात
बासियै गौरकै बाटि बौरी पाणी
औयै थौ रुकौन्दौ



औरियाइ सुन्नौ कि- "गौरके बाटि
रौ पाणी तै आफूइ शुकै लौ।" पर
कुछु ई दुसु बासियै तेसरै गौरे दि
बौरी मरछर बौरवै।



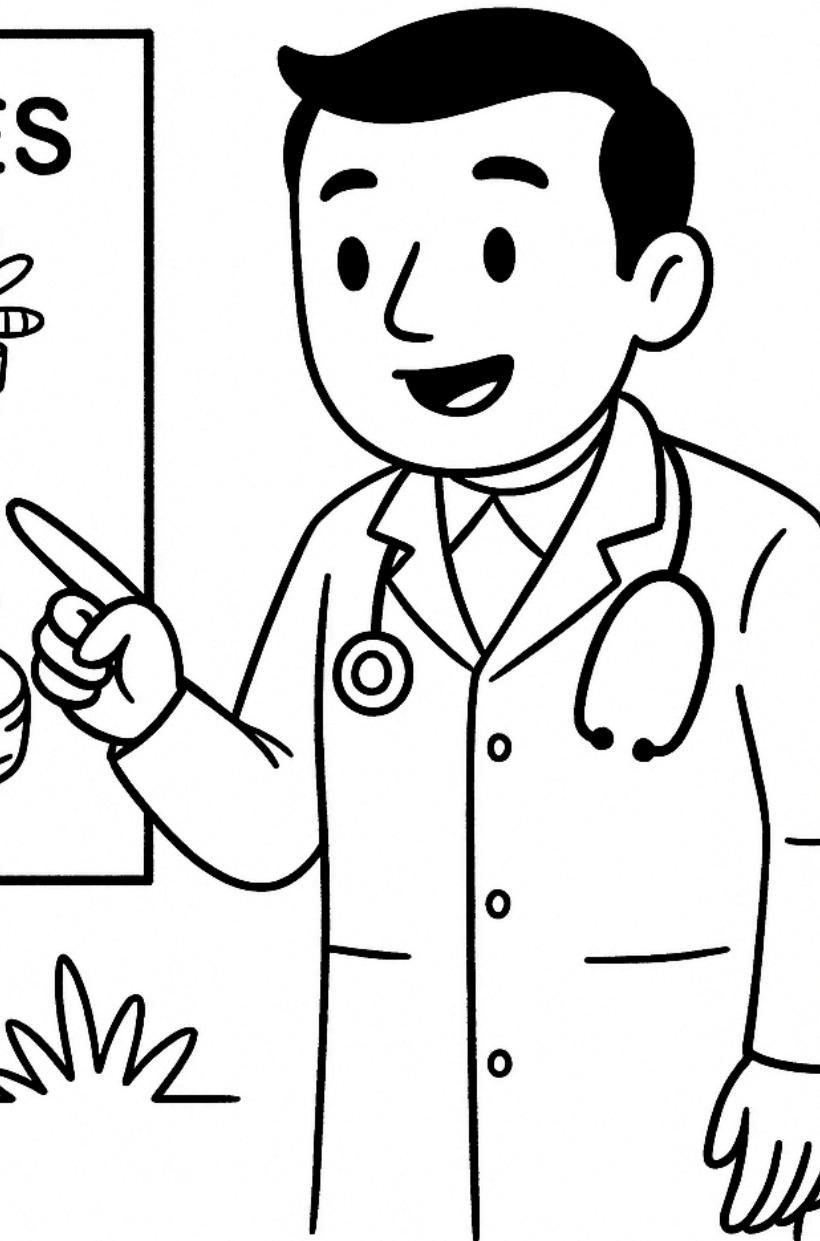
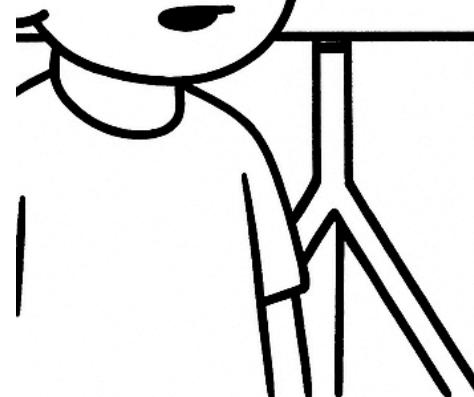
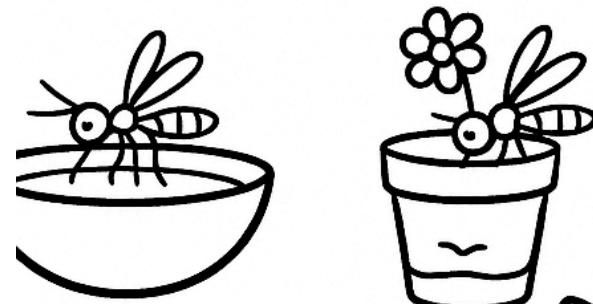
तेसरी बेटी पूजाइ बुखार आये ।
एज़ि बौज़े कौइ सै बौरी कमज़ोर
उई । औरियाइ सै औस्पताल
दि गिणी ।



ਡੋਕਟਰੇਡ ਬੌਲੈ- "ਕਿ ਇੰਦਿ ਡੇਂਗੂ ਆਈ
ਸੈਕੇ। ਡੇਂਗੂ ਮਚਛਰਾਂ ਕਾਇ ਫੈਲੈ।"

"ਤੁਮਾਰੇ ਗੈਰਕੇ ਬਾਟਿ ਕੇਥਿਕੈ ਪਾਣੀ ਤੈ
ਨਾ ਰੈਣਕੀ?

MOSQUITOES



डॉक्टरेझ सै सौमज़ायै कि मच्छर
साफ पाणी माझं बी अंडे दैण!"

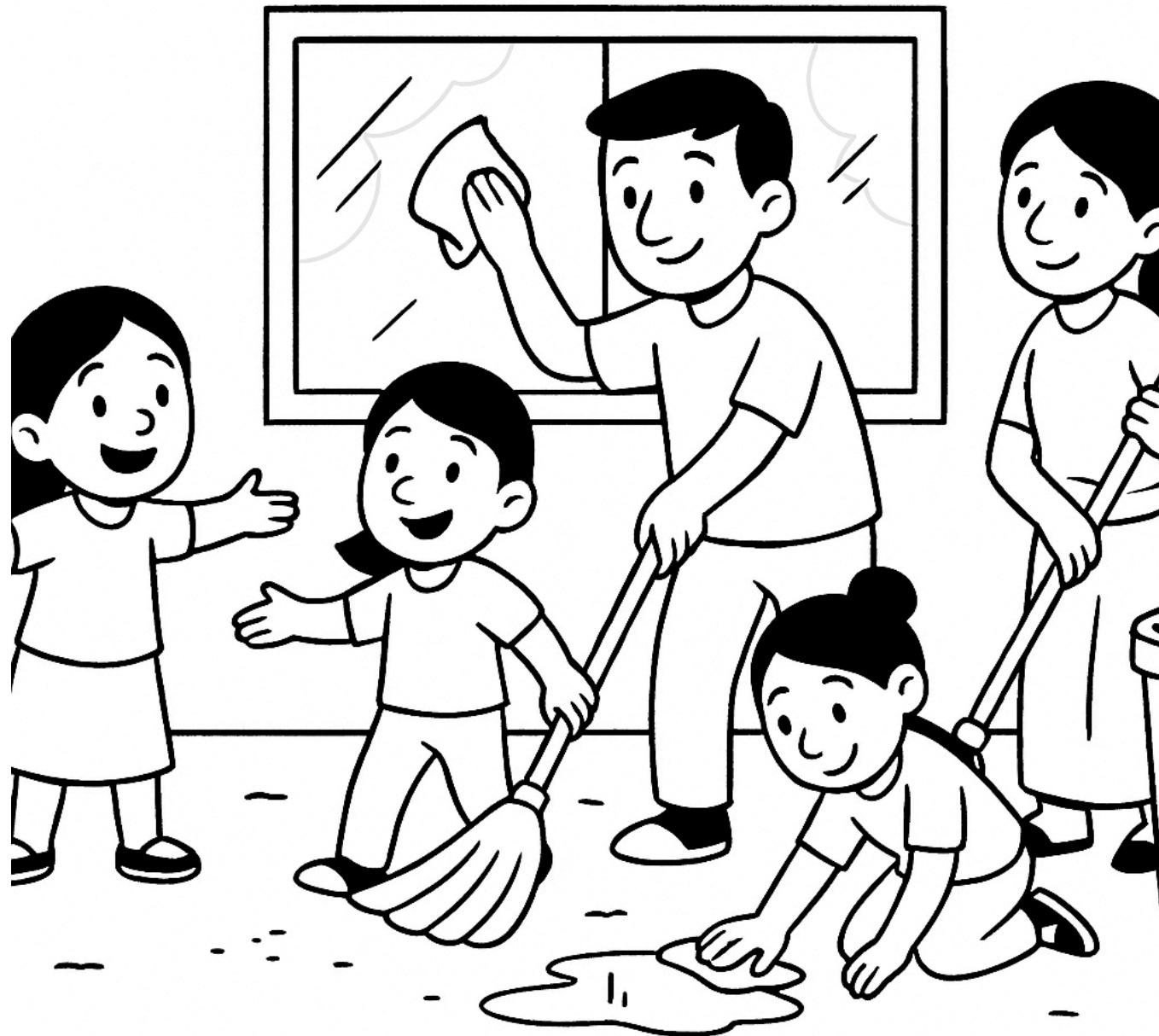
"ओख्वेर, गौमला, जेसदि बी
रुकौन्दौ पाणी आयै तेस पोरु
गाडियौ।"



तैवै औरियाइ गौरके डेझ्यौ साफ
सौफाइ शुरु की, जेटके बी पाणी
रुकौ-दौ थौ। सेउ पोरु फिरकाओ।
आज़ि आपके बाटि बौड़िया कौइ
साफ सौफाइ की।



आौजि तिणी पाणी रै इम बौडिया
कौइ डौकी देणै। आौजि पुराणै टाइर
बाझैर फिरकायै। तेसरौ पुरो पौरिबार
साफ सौफाइ कौरदै लागै।



हर औसे दि सै आपडै आस-पास दि
साफ सौफाइ कौरेण थै एज़ि बौज़ै
कौइ तिउँरी एज़ि आदत बौणी गोइ
थी। एज़ि बौज़ै कौइ मरछर बी कम
उई गोयै थै। औज़ि पूजा बी ठीक
उई गोइ थी।



ਐਵਰਿਧਾਇ ਆਪਣੇ ਪੋਡੋਸੀ ਬੀ
ਸੌਮਜ਼ਾਯੈ 'ਮਚਛਰੁਂ ਜਾਂਗਣੇਰੀ ਫੁਵਾਇ
ਕੌਇ ਕੌਡਿਆ ਆਪਣੇ ਗੌਰੇ ਰੇ ਆਸ
ਪਾਸ ਦਿ ਸਾਫ ਸੁਥਰੈ ਥੈ।



ਗਾਉਂ ਦਿ ਏਕੈ 'ਸਾਫ-ਸੌਫਾਈ ਰੈ ਔਸ਼ੋ'
ਮੌਨਾਂਦੇ ਲਾਗੈ। ਔਜ਼ਿ ਹਰ ਏਕ ਜੋਣੈ
ਆਪੜੇ ਗੌਰੈਕੈ ਬਾਟਿ ਸਾਫ ਸੁਥਰੈ
ਥੈਨ-ਦੇ ਲਾਗੈ।



गाउँ रै लोग ऐबै आफुइ आपडै गाउँ
री देखरेख कौरदै लागै । आजि
बोलदै लागै । मरछरुं बैगाओ –
बीमारीउँ बैगाओ ।

रुकौन्दौ पाणिएँ साफ कौरौ,
ओँजि डेंगू-मलेरिया कौइ बौचौ!



ईं कांडणी कौइ आ-कै एशी शिक
मिलै कि मरछारुं कौइ बौचणे रा
सारिउं कौइ बौडिया तौरि कौ
एजौ, सौफाइ, रुकौ-दौ पाणिएइ
साफ कौरौ, औज़ि डेंगू-मलेरिया
कौइ बौचौ!

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में व्यस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,,,धन्यवाद,,,,,,,,,,

